

**Research Paper****वर्तमान समय के विद्यार्थियों के लिए बौद्ध दर्शन में निहित अष्टांगिक मार्ग की प्रासंगिकता****डॉ. आशा पारे**

सहायक प्राध्यापक

बारडोली शिक्षण महाविद्यालय, कटनी

**सारांश**

आज जब हम शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक विकास की बात करते हैं तो उसकी सीमा में बच्चों को समाज की भाषा, रहन-सहन की विधि, रीति रिवाज व आचार विचार सिखाकर उन्हें समाज में समायोजन करने योग्य बनाना उन्हें समाज की अच्छाई बुराई के प्रति संवेदनशील बनाना और समाज की बुराईयों को दूर करने तथा उसमें नई-नई अच्छाईयों को लाने के लिए नेतृत्व शक्ति का विकास करना सब कुछ आता है। इन सबके विकास के लिए हम विद्यालयों में सामूहिक कार्य की विधियों का प्रयोग करते हैं। बच्चे विद्यालय में समाज की भाषा व आचार विचार सीखकर विद्यालयी समाज में समायोजन करते हैं और सब प्रेम, सहानुभूति और सहयोग से विभिन्न कार्यों का संपादन करते हैं वे ही समूह विशेषों का नेतृत्व करते हैं और इस प्रकार उनका सच्चे अर्थों में सामाजिक विकास होता है। परन्तु वर्तमान समय में विद्यार्थी समाज, परिवार, विद्यालय एवं अपने साथियों के साथ समायोजन नहीं कर पा रहा है। जबकि बौद्धकाल में विद्यार्थी सभी सुख सुविधाओं से अलग रहकर भी अपने साथियों, शिक्षकों आदि के साथ समायोजन कर लेता था।

**अष्टांगिक मार्ग की आवश्यकता:**

भगवान बुद्ध ने इसे "काल चक्र" कहते हैं, अर्थात् समय का चक्र। समय और कर्म अटूट सम्बन्ध है। कर्म का चक्र समय के साथ सदा घूमता रहता है आज आपको जो व्यवहार है वह बीते कल से निकला हुआ है। कुछ लोग हैं जिनके साथ हर वक्त बुरा होता रहता है।

**सम्यक् दृष्टि** : मज्झिमनिकाय में कर्मों का वर्तमान समय में विद्यार्थियों को सम्यक् दृष्टि की आवश्यकता है क्योंकि अधिकांश का व्यक्तित्व अच्छाई और बुराई के महत्व से परिचित नहीं, उसको वास्तविक ज्ञान तथा वास्तविक जगत से परिचित कराने हेतु विद्यार्थियों को सम्यक् दृष्टि की शिक्षा अति आवश्यक है, जिससे एसको वास्तविक जगत का ज्ञान हो सके।

**सम्यक् संकल्प**— संकल्प शक्ति का आज के विद्यार्थियों में कोई महत्व नहीं है। आज प्रतिदिन विद्यार्थी अपने निर्णय बदलता रहता है। अर्थात् उनमें संकल्पों का अभाव है, संकल्प शक्ति के विकास हेतु वर्तमान समय हेतु संकल्प शक्ति की आवश्यकता है।

**सम्यक् वाचा**— आज के विद्यार्थियों में वाकपटुता देखने को नहीं मिलती है। विद्यार्थियों में आज अपने अध्यापकों और परिवार जनों से वार्तालाप का ज्ञान नहीं है। सम्यक् वाणी के माध्यम से हम विद्यार्थियों के अन्दर वार्तालाप सम्बन्धी कौशलता का विकास कर सकते हैं।

**सम्यक् कर्मान्त**— व्यक्ति को अपने कर्मों का ज्ञान होना अति आवश्यक है, परन्तु आज का व्यक्ति अपने कर्मों को लेकर गम्भीर नहीं है। अच्छे कार्य हेतु अच्छे आचरण की आवश्यकता होती है और विद्यार्थियों के अन्दर अच्छे आचरण

को विकसित करने के लिए क्रोध, द्वेष, लालच, दुराचार आदि का त्याग करना पड़ेगा।

**सम्यक् आजीव**— आज का विद्यार्थी अपने आदर्श जीवन का स्थापित नहीं करना चाहता, उसको सम्यक् आजीव का प्रशिक्षण प्रदान कर उसको उद्देश्य पूर्व जीवन जीने की शिक्षा दी जा सकती है, जिससे भविष्य में समाज कल्याण हेतु व्यापार का चयन कर सके।

**सम्यक् व्यायाम**— सम्यक् व्यायाम के माध्यम से विद्यार्थियों अपने शरीर की शुद्धी और शरीर हेतु सात्विक भोजन के लिए प्रेरित कर उनको योग के प्रति जागरूक कर उसको शारीरिक रूप से शक्तिशाली बनाया जा सकता है।

**सम्यक् स्मृति**—सम्यक् स्मृति के माध्य से विद्यार्थियों के अन्दर एकाग्रता, स्मरण, चिन्तन एवं सृजनात्मक शक्ति का विकास किया जा सकता है।

**सम्यक् समाधि**— सम्यक् समाधि के माध्यम से विद्यार्थियों के अन्दर प्रज्ञा को प्राप्त करने की क्षमता का विकास किया जा सकता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनोवैज्ञानिकों ने बताया है कि उसमें सामूहिकता की मूल प्रवृत्ति होती है जो उसे समूह में रहने के लिए प्रेरित करती है। समूह में वह कभी एक दूसरे से प्रेम करता है कभी घृणा, कभी एक दूसरे के प्रति सहानुभूति दिखाता है, कभी द्वेष और कभी एक दूसरे का सहयोग करता है और कभी असहयोग। समान्यतः लोग बच्चों में प्रेम, सहानुभूति और सहयोग की भावना के विकास को ही सामाजिक विकास कहते हैं। समाजशास्त्रियों ने बताया कि प्रत्येक मनुष्य अपने समाज की भाषा, रहन-सहन की विधि, रीति रिवाज और आचार विचार को सीखकर अपने समाज में समायोजन करता है। कुछ लोग बच्चों की इस

**Research Paper**

क्रिया में प्रशिक्षित करने को ही सामाजिक विकास कहते हैं<sup>1</sup> परन्तु समाजशास्त्रियों की भाषा में यह समाजीकरण कहलाता है।

आज जब हम शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक विकास की बात करते हैं तो उसकी सीमा में बच्चों को समाज की भाषा, रहन-सहन की विधि, रीति रिवाज व आचार विचार सिखाकर उन्हें समाज में समायोजन करने योग्य बनाना उन्हें समाज की अच्छाई बुराई के प्रति संवेदनशील बनाना और समाज की बुराईयों को दूर करने तथा उसमें नई-नई अच्छाईयों को लाने के लिए नेतृत्व शक्ति का विकास करना सब कुछ आता है। इन सबके विकास के लिए हम विद्यालयों में सामूहिक कार्य की विधियों का प्रयोग करते हैं। बच्चे विद्यालय में समाज की भाषा व आचार विचार सीखकर विद्यालयी समाज में समायोजन करते हैं और सब प्रेम, सहानुभूति और सहयोग से विभिन्न कार्यों का संपादन करते हैं वे ही समूह विशेषों का नेतृत्व करते हैं और इस प्रकार उनका सच्चे अर्थों में सामाजिक विकास होता है। परन्तु वर्तमान समय में विद्यार्थी समाज, परिवार, विद्यालय एवं अपने साथियों के साथ समायोजन नहीं कर पा रहा है। जबकि बौद्धकाल में विद्यार्थी सभी सुख सुविधाओं से अलग रहकर भी अपने साथियों, शिक्षकों आदि के साथ समायोजन कर लेता था।<sup>2</sup> अगर बौद्ध दर्शन के अष्टांग मार्ग को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों का विकास किया जाये तो वह एक आदर्श व्यक्तित्व को प्राप्त कर सकेंगे।<sup>3</sup>

- ❖ **बौद्ध धर्म और अष्टांगिक मार्ग**—भगवान बुद्ध ने मोक्ष प्राप्ति के 3 मार्ग बताए हैं। 1. अष्टांगिक मार्ग, 2. त्रिरत्न, 3. अष्टांग योग

भगवान बुद्ध ने बताया कि तृष्णा हो सभी दुःखों का मूल कारण है।<sup>4</sup> तृष्णा के कारण संसार की विभिन्न वस्तुओं को ओर मनुष्य प्रवृत्त होता है। और जबवह उन्हें प्राप्त नहीं कर सकता है अथवा जब वे प्राप्त होकर भी नष्ट हो जाती है। तब उसे दुःख होता है। तृष्णा के साथ मृत्यु प्राप्त करने वाला प्राणी उनकी प्रेरणा से फिर भी जन्म गृहण करता है और संस्कार के दुःखचक्र में पिसता रहता है। इसे दुःख गामिनी प्रतिपदा कहते हैं।

- ❖ **अष्टांगिक मार्ग की आवश्यकता:**

भगवान बुद्ध ने इसे "काल चक्र" कहते हैं, अर्थात् समय का चक्र। समय और कर्म अटूट सम्बन्ध है। कर्म का चक्र समय के साथ सदा घूमता रहता है आज आपको जो व्यवहार है वह बीते कल से निकला हुआ है। कुछ लोग हैं जिनके साथ हर वक्त बुरा होता रहता है। तो इसके पीछे कार्य-कारण की अनन्त श्रृंखला है। दुःख या रोग और सुख या सेहत सभी हमारे पिछले विचार और कर्म का परिणाम हैं। पुनर्जन्म का कारण पिछला जन्म है।

**1. सम्यक् दृष्टि :** अविद्या के कारण संसार तथा आत्मा के सम्बन्ध में मिथ्या दृष्टि उत्पन्न होती है,<sup>5</sup> जैसे आत्मा अमर है, संसार सत्य है आदि। इस प्रकार हम अनित्य, दुःखमय और अनात्म वस्तु को नित्य समझने लगते हैं। इस मिथ्या दृष्टि को छोड़कर वस्तुओं के यथार्थ स्वरूप पर ध्यान रखने को सम्यक् दृष्टि कहते हैं। कायिक, वाचिक और मानसिक कर्म के दो भेद हैं – कुशल तथा अकुशल। इन दोनों कर्मों को भली प्रकार से जानना सम्यक् दृष्टि है। मज्झिमनिकाय में कर्मों का वर्तमान समय में विद्यार्थियों को सम्यक् दृष्टि की आवश्यकता है क्योंकि अधिकांश का व्यक्तित्व अच्छाई और बुराई के महत्व से परिचित नहीं, उसको वास्तविक ज्ञान तथा वास्तविक जगत से परिचित कराने हेतु विद्यार्थियों को सम्यक् दृष्टि की शिक्षा अति आवश्यक है, जिससे एसको वास्तविक जगत का ज्ञान हो सके।

**2. सम्यक् संकल्प—** अपना ऐश्वर्य एवं सत्ता बढ़ाने का संकल्प यदि प्रत्येक व्यक्ति करे तो उससे उसको तथा औरों के समान ही हानि होगी। अतः कामोपभोग में बुद्ध न होने, औरों के साथ पूर्ण मैत्री करने और दूसरों के सुख-संतोष में वृद्धि करने का शुद्ध संकल्प मन में रखना उचित है। संकल्प शक्ति का आज के विद्यार्थियों में कोई महत्व नहीं है। आज प्रतिदिन विद्यार्थी अपने निर्णय बदलता रहता है। अर्थात् उनमें सकल्पों का अभाव है, संकल्प शक्ति के विकास हेतु वर्तमान समय हेतु संकल्प शक्ति की आवश्यकता है।

**3. सम्यक् वाचा—** असत्य भाषण, चुगली, गाली, बकबक आदि असत् वाणी के कारण समाज का संगठन बिखर जाता है, और झगड़े खड़े होकर वे हिंसा का कारण बनते हैं। अतः सत्य, परस्पर सादय साधने वाला, प्रिय एवं मित भाषण करना उचित है। इसी को सम्यक् वाचा कहते हैं। आज के विद्यार्थियों में वाकपटुता देखने को नहीं मिलती है। विद्यार्थियों में आज अपने अध्यापकों और परिवार जनों से वार्तालाप का ज्ञान नहीं है।<sup>6</sup> सम्यक् वाणी के माध्यम से हम विद्यार्थियों के अन्तर वार्तालाप सम्बन्धी कौशलता का विकास कर सकते हैं।

**4. सम्यक् कर्मान्त—** प्राण-घात, चोरी, व्याभिचार आदि कर्म काया के द्वारा हो जायें तो उससे समाज में बड़े अनर्थ होंगे। अतः प्राणघात, चोरी व्यभिचर आदि कर्मों से अलिप्त रहकर ऐसे ही कार्य-कर्मों का आचरण करना चाहिए, जिनसे लोगों का कल्याण हो। इसी को सम्यक् कर्मान्त कहते हैं। व्यक्तित्व को अपने कर्मों का ज्ञान होना अति आवश्यक है, परन्तु आज का व्यक्ति अपने कर्मों को लेकर गम्भीर नहीं है। अच्छे कार्य हेतु अच्छे आचरण की आवश्यकता होती है और विद्यार्थियों के अन्दर अच्छे आचरण को विकसित करने के लिए क्रोध, द्वेष, लालच, दुराचार आदि का त्याग करना पड़ेगा।

**5. सम्यक् आजीव<sup>7</sup>—** सम्यक् आजीव का अर्थ है अपनी उपजीविका इस प्रकार चलाना जिससे समाज को हानि न

**Research Paper**

पहुँचे। उदाहरण के लिए मद्य-विक्रय, जानवरों का लेन-देन आदि व्यवसाय को नहीं करने चाहिए, क्योंकि स्पष्ट है कि इनसे समाज को कष्ट पहुंचता है। ऐसे व्यवसाय वर्ज्य करके शुद्ध एवं सरल व्यवसाय से अपनी उपजीविका का चलाना ही सम्यक् आजीव है। आज का विद्यार्थी अपने आदर्श जीवन का स्थापित नहीं करना चाहता, उसको सम्यक् आजीव का प्रशिक्षण प्रदान कर उसको उद्देश्य पूर्व जीवन जीने की शिक्षा दी जा सकती है, जिससे भविष्य में समाज कल्याण हेतु व्यापार का चयन कर सके।

**6. सम्यक् व्यायाम-** जो बुरे विचार मन में न आये हों उन्हें मन में आने के लिए अवसर न देना, जो बुरे विचार मन में आये हों उनका नाश करना, जो सुविचार मन में उत्पन्न न हुए हों उन्हें उत्पन्न करने की चेष्टा करना और जो सुविचार मन में उत्पन्न हुए हों उन्हें बढ़ाकर पूर्णता तक पहुँचाने की चेष्टा करना— इन चार मानसिक प्रयत्नों को सम्यक् व्यायाम कहते हैं। सम्यक् व्यायाम के माध्यम से विद्यार्थियों अपने शरीर की शुद्धी और शरीर हेतु सात्विक भोजन के लिए प्रेरित कर उनको योग के प्रति जागरूक कर उसको शरीरिक रूप से शक्तिशाली बनाया जा सकता है।

**7. सम्यक् स्मृति-** शरीर अपवित्र पदार्थों का बना हुआ है, यह विवेक जागृत रखना, शरीर की सुख-दुःखादि वेदनाओं का बार-बार अवलोकन करना, स्वचित्त का अवलोकन करना और इन्द्रियों एवं उनके विषयों से कौन-से बंधन उत्पन्न होते हैं तथा उनका नाश कैसे किया जा सकता है आदि मनोधर्मों का अच्छा विचार करना—यही सम्यक् स्मृति है। सम्यक् स्मृति के माध्य से विद्यार्थियों के अन्दर एकाग्रता, स्मरण, चिन्तन एवं सृजनात्मक शक्ति का विकास किया जा सकता है।

**8. सम्यक् समाधि-** अपने शरीर पर, मृत शरीर पर, मैत्री, करुणा आदि मनोवृत्तियों पर अथवा पृथ्वी, तप, तेज आदि पदार्थों पर चित्त एकाग्र करके चार ध्यानों का सम्पादन करना ही सम्यक् समाधि है। सम्यक् समाधि के मध्यक से विद्यार्थियों के अन्दर प्रज्ञा को प्राप्त करने की क्षमता का विकास किया जा सकता है।<sup>8</sup>

**निष्कर्ष** — अष्टांगिक मार्ग अपनाने से विद्यार्थियों को निम्न लाभ होंगे—

1. विद्यार्थियों के अहंकार का विनाश होगा।
2. विद्यार्थियों की स्वार्थ भावना का विनाश होगा।
3. विद्यार्थियों को ध्यान लगाने में सरलता का अनुभव होगा।
4. विद्यार्थियों को अच्छाई एवं बुराई का पूर्ण ज्ञान होगा।
5. विद्यार्थियों को वास्तविक जगत का ज्ञान होगा।
6. विद्यार्थियों के अन्दर संकल्प शक्ति का विकास होगा।
7. विद्यार्थियों के अन्दर वाकपटुता एवं वार्तालाप कौशलों को समझ सकेंगे।

8. विद्यार्थियों के अन्दर उच्च आचरण एवं व्यवहार का विकास होगा।

9. विद्यार्थी अपनी बुराईयों को दूर कर सकेंगे।

10. विद्यार्थी स्वस्थ शरीर एवं मन का विकास कर सकेंगे।

11. विद्यार्थियों में एकाग्रता, चिन्तन एवं सृजनात्मक शक्ति का विकास होगा।

12. विद्यार्थियों के अन्दर उच्च स्तर की प्रज्ञा का प्रवेश होगा।

**सन्दर्भ**

1. आनन्द भदन्तःजातक हिन्दी साहित्य प्रकाशन प्रयाग, इलाहाबाद, पृ. 425
2. प्रबोधचन्द्र : इण्डिया एण्ड चाइना, द्वितीय संस्करण, न्यायार्क, पृष्ठ-51
3. वाजपेयी कृष्णदत्त : "उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का विकास" ब्यूरो प्रकाशन वाराणसी उत्तर प्रदेश पृष्ठ- 125.
4. अम्बेडकर डा० बी०आर०: भगवान बुद्ध या कार्लमार्क्स, आनन्द साहित्य सदन, सिद्धार्थ मार्ग, अलीगढ़, पृष्ठ-20.
5. कश्यप जगदीश, मज्झिम निकाय, नालन्दा देवनागरी पालि ग्रन्थमाला, पृष्ठ 36.
6. शर्मा आई सी : "इथीकल फिलोसोफी", आनन्द साहित्य सदन, सिद्धार्थ मार्ग, अलीगढ़, पृष्ठ-162
7. शर्मा आई सी : "इथीकल फिलोसोफी", आनन्द साहित्य सदन, सिद्धार्थ मार्ग, अलीगढ़, पृष्ठ-163
8. कबीरप्रो. हुमायूँ —भारतीय शिक्षा दर्शन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ-111.